विशद
चौबीस तीर्थंकर विधान

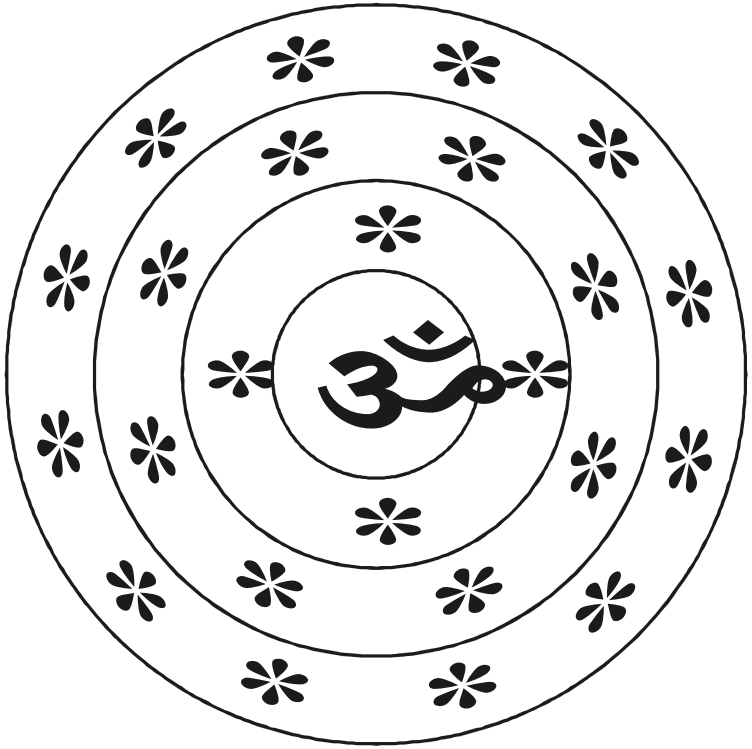

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय में - 4
द्वितीय वलय में - 8
तृतीय वलय में - 12
कुल - 24 अर्घ्य

aM{`Vm - प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद चौबीस तीर्थंकर विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2014 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. सोनू दीदी, ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार)
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566
3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301)
4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
5. जय अरिहन्त ट्रेडर्स (हरीश जैन)
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली, मो. 9818115971

मूल्य - 21/- रु. मात्र

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री मदनचंद प्रमेन्द्र कुमार जैन

एच-9, गांधी नगर, नाकामदार-अजमेर मो. 9717798082

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

''तीर्थंकर''

भरत और ऐरावत क्षेत्र में दस कोड़ा-कोड़ी सागर के प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में 24 ही तीर्थंकर उत्सर्पिणी और 24 ही तीर्थंकर अवसर्पिणी में होते हैं। ऐसी अनंत चौबीसियाँ हो चुकी हैं और अनन्त चौबीसियाँ होती रहेगी। भूत-वर्तमान और भविष्यकाल की अपेक्षा तीन चौबीसी कहलाती हैं। और 5 भरत तथा 5 ऐरावत इन दस क्षेत्रों की तीन काल सम्बन्धी चौबीसी की अपेक्षा तीस चौबीसी कहलाती है। भरतैरावत क्षेत्र के तीर्थंकर नियम से पाँच कल्याणक वाले होते हैं और इनका आगमन नरक या देवगति से होता है। विदेह क्षेत्र में पाँच मेरु सम्बन्धी चार नगरियों में सीमन्धर, युगमन्धर आदि 20 तीर्थंकर सदा विद्यमान रहते हैं। एक कोटि वर्ष पूर्व की आयु समाप्त होने पर वे मोक्ष जाते हैं और उनके स्थान पर अन्य तीर्थंकर विराजमान हो जाते हैं। लेकिन 20 नाम शाश्वत हैं अर्थात् जिस नाम के तीर्थंकर को मोक्ष हुआ है उसकी जगह विराजमान होने वाले तीर्थंकर का नाम मोक्ष जाने वाले तीर्थंकर का जो था वही होगा। विदेह क्षेत्र में एक साथ अधिक से अधिक 160 तीर्थंकर हो सकते हैं।

विदेह क्षेत्र में सदा चतुर्थ काल सदृश रहता है अतः मोक्ष मार्ग निरन्तर प्रचलित रहता है, परन्तु भरत और ऐरावत क्षेत्र में काल चक्र परिवर्तित होता है, अतः इसके तृतीय काल के मध्य और चतुर्थ काल में ही तीर्थंकरों का जन्म होता है।

इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव तृतीय काल में उत्पन्न हुए और जब तृतीय काल के तीन वर्ष साढ़े आठ माह बाकी थे अपनी 84 लाख पूर्व की आयु पूरी करके मोक्ष चले गये। शेष तीर्थंकर चतुर्थ काल में उत्पन्न हुए और चतुर्थ काल में ही मोक्ष चले गये।

अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी चतुर्थ काल के तीन वर्ष साढ़े आठ माह बाकी थे अपनी 72 वर्ष की आयु पूरी करके मोक्ष चले गये। तीर्थंकर का तीर्थ उनकी प्रथम देशना से शुरू होता है और आगामी तीर्थंकर की प्रथम देशना के पूर्व तक चलता है और इसी तरह अगले तीर्थंकर का तीर्थ क्रम से चलता है।

चौबीस तीर्थंकर व्रत विधि

24 तीर्थंकर व्रत करने वालों को व्रत के दिन 24 तीर्थंकर प्रतिमा का अभिषेक एवं पूजन करना चाहिए। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार एवं जघन्य विधि एकाशन है। इसमें 24 व्रत करना है। व्रत के दिन प्रत्येक तीर्थंकर की एक-एक जाप्य एवं एक समुच्चय जाप्य करना है। व्रत विधि का कोई बंधन नहीं है।

एक महीने में एक व्रत अवश्य करें। व्रत के उद्यापन में प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित यह 'चौबीस तीर्थंकर विधान' करें। 24-24 उपकरण मंदिर जी में भेंट करें।

चौबीसी प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाकर मंदिरजी में विराजमान करवाए अथवा 24 तीर्थंकर से संबंधित कोई विधान या शास्त्र प्रकाशित करवाकर वितरित करें।

इस व्रत के प्रभाव से अनेक प्रकार की दुर्घटना, रेल, मोटर आदि के एक्सीडेण्ट आदि का निवारण होगा, अकाल मृत्यु टलेगी। अनेक प्रकार के कष्ट दूर होंगे और सब प्रकार से सुख-शांति, यश, सम्पत्ति, संतति आदि की वृद्धि होगी। लौकिक के साथ-साथ क्रम-क्रम से कालान्तर में पारलौकिक सुख के भी उत्तराधिकारी बनेंगे।

❋❋❋

आदि जिन आदिकर चल दिये धर्म का,
हेतु जिनने बताया हमें शर्म का।
आदि जिन हो गये जग में तारण तरण,
उनके चरणों में हो मेरा शत् शत् नमन्।।

तीर्थंकर स्तवन

दोहा– तीर्थंकर चौबीस हैं, जग में मंगलकार।
जिनके चरणों में 'विशद', वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय–जय तीर्थंकर पदधारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
वृषभादी चौबिस जिन गाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, दिव्य ध्वनि सुनकर हर्षाए।
कर्म नाश कर मुक्ती पाए, शिवपुर में साम्राज्य बनाए।।
मोक्ष कल्याणक देव मनाए, चरण चिन्ह शुभ इन्द्र बनाए।
इन्द्र सभी भक्ती को आए, विशद भाव से शीश झुकाए।।
मुनी साथ कई मुक्ती पाए, मोक्ष महल के स्वामी गाए।
अतिशय किए इन्द्र ने भारी, भक्ती कीन्ही विस्मयकारी।।
नर नारी जिनके गुण गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते।
वंदन कर सौभाग्य जगाते, श्री जिनेन्द्र को शीश झुकाते।।
अर्घ्य बोलते मंगलकारी, स्तुति गाते हैं मनहारी।
श्रावक दौड़े–दौड़े जाते, प्रभु की जय–जयकार लगाते।।
गाते हैं कई भजनावलियाँ, खिलती हैं अंतर की कलियाँ।
भव्य जीव सौभाग्य जगाते, तीर्थंकर का दर्शन पाते।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार–बार वंदन को जाएँ।
विघ्न दूर हो जावें सारे, भक्ती के हों भाव हमारे।।
भक्ती करके पुण्य कमाएँ, तीर्थंकर पदवी को पाएँ।
अंतिम यही भावना भाते, तीर्थंकर पद शीश झुकाते।।
जय–जय तीर्थंकर अवतारी, ग्रह बाधा मिट जाए सारी।
मम् जीवन हो मंगलकारी, यही भावना रही हमारी।।

(पुष्पाजंलि क्षिपेत्)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चौबीस तीर्थंकर विधान पूजा

स्थापना

भव्य भावना सोलह कारण, भाते हैं जो जग के जीव।
दर्श विशुद्धी के द्वारा वे, प्रगटाते हैं पुण्य अतीव।।
तीर्थंकर पदवी पाते हैं, प्राप्त करें वे केवलज्ञान।
वृषभादिक चौबीस हुए हैं, वर्तमान में महति महान।।

दोहा– अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पावें केवलज्ञान।
ऐसे जिन तीर्थेश का, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्य ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

कलुषित भावों ने हे प्रभुवर, हमको भव भ्रमण कराया है।
जल से निर्मलता आती है, यह आज समझ में आया है।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्ष्या से जलकर हे भगवन्, संतापित होते आए हैं।
चन्दन से शीतलता मिलती, संताप नशाने आए हैं।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपुर के जो वासी वह, भव वन में आज भटकते हैं।
अक्षयपद न मिल पाया है, दर–दर पर माथ पटकते हैं।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के सुख की अभिलाषा, विषयों में हमें फँसाए हैं।
है प्रबल काम शत्रू जग में, सबको जो दास बनाए हैं।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा सताती है हमको, सन्तुष्ट नहीं हम कर पाए।
न क्षुधा शांत हो पाई कई, नैवेद्य बनाकर के खाए।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर की आँख न खुल पाई, दुःखों के बादल घिरे रहे।
अज्ञान तिमिर में फँसने से, मिथ्यातम के घन घात सहे।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप हृदय में छाया है, कर्मों की धूप सताती है।
प्रभु चरण छाँव में आने से, झोली क्षण में भर जाती है।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य के फल से मानव गति, पाकर न धर्म कमाया है।
न विशद मोक्षफल पाया है, यू ही कई बार गँवाया है।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नौका रत्नत्रय की अनुपम, इस भव सिन्धू से पार करें।
जो आलम्बन लेते इसका, वह जीवन में शिव नारी वरें।।
हम चौबिस जिनवर की अर्चा, करके मन में हर्षाते हैं।
अब राही बनने शिवपद के, नत सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांतीधारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से हम यहाँ, देते शांती धार।। *(शांतये शांतिधारा)*

पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हे नाथ !।
मुक्ती पथ में हे प्रभो !, आप निभाओ साथ।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

अर्घावली

दोहा– चौबीसों जिनराज के, गुण हैं महति महान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने शिव सोपान।।
(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।)

(तर्ज : वन्दे मातरम्...)

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।
तीर्थंकर वृषभेष ने भू पर, धर्म ध्वजा फहराई है।
केवलज्ञान के द्वारा प्रभु ने, जिनवाणी भी गाई है।।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का भी उपदेश दिया।
भूखे को भोजन की सुविधा, पाने का संदेश दिया।।
आदिम तीर्थंकर बन प्रभु ने, धरती पर अवतार लिया।
स्वयं बुद्ध होकर भगवन् ने, संयम दे उपकार किया।।
मोक्ष मार्ग पर सबसे पहले, चलकर जग को बता दिया।
सरल किया है मोक्ष का मारग, बढ़ो इसी पर जता दिया।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीतिगणधर चतुरशीति सहस्त्र मुनिगणसहित श्री आदिनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।
कर्मों का महाराजा बनकर, जीवों को ललचाता है।
मोह महा चक्री बनकर के, जग को नाच नचाता है।
उस राजा को जीत के प्रभु जी, इस जगती पर विजित हुये।
द्वितीय तीर्थंकर इस जग में, विजय श्री पा अजित हुये।
अजिनाथ बनकर के तुमने, राग द्वेष को जीत लिया।
सार्थक नाम आपने पाकर, कर्मों को भयभीत किया।।
कर्म विजेता बनने हेतू, हमको भी दे दो वरदान।
अजितनाथ जी तव चरणों का, विशद लगाऊँ मैं भी ध्यान।।
अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं नवतिगणधरैकलक्ष मुनिगण सहित श्री अजितनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।
कठिन जीतना है कषाय का, उसको कर दिखलाया है।
कर्म शत्रु जो लगे पुराने, उनको मार भगाया है।।
सारे जग के कार्य असम्भव, अपने हाथों आप किये।
मुक्ती पथ से हार न मानी, कितने कड़वे घूँट पिये।।
संभवनाथ जी संभव कर दो, मोक्ष मार्ग मेरे भी हेत।
भव समुद्र को पार करूँ मैं, पा जाऊँ आतम का भेद।।

भटक रहे हैं चरण शरण बिन, अपनी शरण हमें दीजे।
देकर हमको 'विशद'' सहारा, अपने पास बुला लीजे।।
अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचोत्तर शत गणधर द्वयलक्ष मुनिगण सहित श्री संभवनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।
भव बंधन से छूट गये जो, बन गये हैं शिव के नंदन।
चर अरु अचर जीव सब जग के, करते हैं पद का वंदन।।
जिस पदवी को तुमने पाया, करते उसका अभिनंदन।
हे ! अभिनंदन तव चरण कमल की, धूली है शीतल चंदन।।
आत्म ध्यान को पाकर तुमने, मैटा भव का आक्रंदन।
तप के द्वारा तपा तपाकर, आत्म बनाया है कुंदन।।
मन में आकुलता छाई मम, कर्म ने डाला है बंधन।
अभिनंदन जी अभिवंदन है, करदो कर्मों का खण्डन।।
अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्र्युत्तर शत गणधर त्रयलक्ष मुनिगण सहित श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

श्री जिनेन्द्र के चरण की, भक्ति फले अभिराम।
'विशद' भाव से हम यहाँ, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अर्हत् परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

राज ताज गजराज तुरग को, त्याग के वन की शरण लही।
छोड़के सारे जग का वैभव, संयम तप की शरण गही।।
कुमति त्यागकर सुमति प्राप्त कर, सुमति नाम को पाया है।
केवलज्ञान जगाकर तुमने, सार्थक नाम बनाया है।।
लोकालोक प्रकाशित होता, सुमतिनाथ की शुभ मति से।
केहरि किन्नर नरपति द्वारा, पूज्य हुये प्रभु सुरपति से।।
सुमतिनाथ से सुमति के द्वारा, प्राणी पाते शुभ मति को।
वंदन करके सुमतिनाथ को, पाना हमको सद् गति को।।
अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशोत्तर शत गणधर त्रयलक्ष विंशति सहस्र मुनिगण सहित श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।
पद्माकर में पद्म प्रफुल्लित, होता है दिनकर को देख।
पद्म प्रभु के पाद पद्म में, अंकित लाल पद्म का लेख।।
पाद पद्म में चतुर्दिशा से, श्रावक दौड़े आते हैं।
भक्ति भाव से वंदन करके, प्राणी मधु रस पाते हैं।।
पद्म पराग चाहता मैं भी, पाद पद्म को पाता हूँ।
पद्म प्रभु आशीष दीजिये, पद में शीश झुकाता हूँ।।
चरणों में बस अर्ज यही है, कृपा नाथ हम पर कीजे।
दया निधे हे ! पद्म प्रभु जी, हमको पंथ बता दीजे।।
अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकादशोत्तर शत गणधर त्रयलक्ष त्रिंशत सहस्र मुनिगण सहित श्री पदमप्रभ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

सुंदर पारस मणि भी फीकी, पड़ती प्रभु की शोभा से।
जिन सुपार्श्व जी दमक रहे हैं, लोक शिखर पर आभा से।।
जिनके दर्शन कर लेने पर, पूरी होती आशाएँ।
विशद नष्ट हो जाती जितनी, लगी हुई थीं बाधाएँ।।
तीन काल में अनुपम पारस, तीन लोक के शिखामणी।
ऋषि मुनियों के मध्य में प्रभु जी, आप हैं उत्तम पार्श्वमणी।।
लोकालोक प्रकाश करे वह, पाया तुमने केवलज्ञान।
इसीलिये तो हुये धरा पर, आप जहाँ में सर्व महान्।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचनवति गणधर त्रिलक्ष मुनिगण सहित श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

शरद चंद्र चंदन से चर्चित, करता जिनके चरण कमल।
नहीं जहाँ में दिखता कुछ भी, चंद्र प्रभु सम धवल अमल।।
सूर्य चंद्र लज्जित होकर के, चरणों में झुक जाते हैं।
चंद्रप्रभु की चरण वंदना, करने हेतू आते हैं।।
चंद्र चाँदनी की शीतलता, हाथ जोड़ सिरनाती है।
चंद्र मणी तो प्रमुदित होकर, सादर शीश झुकाती है।।
रात कुमुदिनी खिल जाती है, चंद्र बिम्ब के दर्शन से।
विशद ज्ञान का फूल यों खिलता, चंद्र प्रभु के चरणन से।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनवति गणधर द्विलक्ष पंचाशत सहस्र मुनिगण सहित श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

धवल पुष्प पंक्ति सरवर में, मोहित करती जग जन को।
पुष्पदंत की सुंदर सूरत, करती मोहित तन मन को।।
सूर्य उदय को देख कमल ज्यों, नत मस्तक हो जाता है।
पुष्पदंत के शुभादर्श से, मम मस्तक झुक जाता है।
पुष्प सुकोमल और सुगंधित, सरवर को शोभित करता।
अपनी आभा के द्वारा जो, जन-जन के मन को हरता।।
शंख पुष्प की शोभा प्रभुजी, पुष्पदंत का तन पाता।
चरण वंदना करता हूँ मैं, विशद भाव से गुण गाता।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाशीति गणधर द्वयलक्ष मुनिगण सहित श्री पुष्पदंतनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

वीतरागता धारण करते, शीतलता को मात करें।
शीतलनाथ जिनेश्वर जग में, समता की बरसात करें।
चंदन सी शीतलता मिलती, प्रभु पद के स्पर्शन से।
निज आतम की छवि दिखती है, शीतलनाथ के दर्शन से।।
जल स्वभाव में आ जाता तब, हो जाता है अतिशीतल।
कतक योग से नश जाता है, जल में हो जो भी कलमल।।
शीतल नाथ जी शीतलता दो, कर दो मेरे कर्म शमन।
विशद ज्ञान से भर दो हमको, करते हैं शत् बार नमन।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्ताशीति गणधरैक लक्ष मुनिगण सहित श्री शीतलनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

आश्रय पाने जग के प्राणी, चरण में तेरे आते हैं।
शुद्ध भाव से आश्रय पाकर, मन वांछित फल पाते हैं।।
आश्रय बिन प्रभु श्रेय नाथ के, भव-भव में भटकाते हैं।
जो पा जाते चरण शरण को, नि:श्रेयस पा जाते हैं।।
आश्रय दे दो पद पंकज की, मुझको श्री श्रेयांस प्रभो !।
श्रेयस्कर मम् जीवन कर दो, शीश झुकाता चरण विभो !।।
आश्रय दाता हो जग जन के, मंगलमय हैं आप महाँ।
आश्रय चाह रहा है सेवक, नाशो मेरा सर्व जहाँ।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त सप्तति गणधर चतुरशीति सहस्र मुनिगण सहित श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

महाकाम को शील शस्त्र से, क्षण में जिनने जीत लिया।
वासुपूज्य जिनके चरणों में, काम ने माथा टेक दिया।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष ये, पंच कल्याणक गाये हैं।
चम्पापुर नगरी में सारे, वासुपूज्य जिन पाये हैं।।
रूप आपका लखकर मेरे, नयन सृजल हो जाते हैं।
चरण वंदना करने हेतू, भाव रोक नहिं पाते हैं।।

वासुपूज्य तुम जगत पूज्य हो, आया हूँ तव चरणों में।
'विशद' मुक्ति न पाई जब तक, वशे रहो मम नयनों में।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट् षष्टि गणधर द्वासप्तति सहस्र मुनिगण सहित श्री वासुपूज्यनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

जिन चरणों की वन्दना, होके भाव विभोर।
विशद भाव से कर रहे, बढ़े शांति चहुँ ओर।।

ॐ ह्रीं अर्हत् परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

चार घातिया कर्म नाशकर, विमल नाथ जी विमल हुये।।
लोकालोक प्रकाशक होकर, 'विशद' ज्ञान से प्रबल हुये।।
सकल चराचर जीव जगत् के, विमल चरण को पाते हैं।
कर्म नाशकर अपने सारे, विमल स्वयं हो जाते हैं।।
द्रव्य भाव नो कर्म नाशकर, निर्मलता को पाता है।
विमल अमल संयम के द्वारा, निर्मल हृदय बनाता है।।
विमल चरण कमलों से फैले, सारे जग में ज्ञान सुवास।
विमलनाथ शक्ती दो इतनी, 'विशद' ज्ञान में हो मम वास।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंच पंचाशत् गणधर अष्ट षष्टि सहस्र मुनिगण सहित श्री विमलनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

प्रभु अनंत भगवंत कंत अब, मुझको भी धीमंत करो।
ज्ञान अनन्त हमें दो भगवन, जन्म मरण का अंत करो।।
ना हो जिसका अंत कभी वह, ज्ञान सुधा बरसाते हैं।
आते जो भी संत चरण में, भव का अंत पा जाते हैं।।
कर्मानन्त का छेदन करके, गुण अनन्त तव पाये हैं।
मोह शत्रु पर विजय प्राप्तकर, जिनानन्त कहलाये हैं।।
सुर नर किन्नर विद्याधर भी, स्तुति करने आते हैं।
ऋषि मुनि यति गणधर भक्ती कर, सुख अनंत पा जाते हैं।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचाशत् गणधर षट् षष्टि सहस्र मुनिगण सहित श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

धर्म कर्म का मर्म धरा पर, धर्मनाथ जी से होता।
कर्म नाशकर नर्म भाव से, बीज पुण्य का भी बोता।।
धर्म गर्म करता तप करके, वसु कर्मों को दहता है।
शर्म त्याग कर देता सारी, पूर्ण दिगम्बर रहता है।।
धर्मनाथ के साथ धर्म की, ध्वजा हमें फहराना है।
समता का सागर धरती पर, धर्म से ही लहराना है।।
धर्म भावना से भरकर मैं, धर्मनाथ पद पाता हूँ।
धर्मनाथ जी तव चरणों में, विशद भावना भाता हूँ।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिचत्वारिंशत गणधर चतुषष्टी सहस्र मुनिगण सहित श्री धर्मनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

महा शांति के दाता जग में, प्रभुवर शांतीनाथ हुये।
कामदेव तीर्थंकर चक्री, त्रय पद जिनको साथ हुये।।
क्रांतिकारि भी शांति पाते, जिनके पद आराधन से।
द्वेष दम्भ छल डरकर भागें, जग में मानव जीवन से।।
महाकाल को संयम द्वारा, तुमने क्षण में ध्वस्त किया।
कामदेव होकर के प्रभु ने, काम शत्रु को पस्त किया।।
शांतिनाथ शांती दो हमको, शांती की भिक्षा मांगें।
विशद शांति समता पाकर हम, आतम के हित में लागें।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट् त्रिंशत् गणधर द्विषष्टि सहस्र मुनिगण सहित श्री शांतिनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

छह खण्डों का वैभव पाकर, भूल स्वयं को भोग किया।
निज वैभव का भान हुआ तो, कण की भांति त्याग दिया।।
धर्म चक्र लेकर के रण में, कुन्थुनाथ जी उतर गये।
कर्म शत्रु के सर पर चढ़कर, भव समुद्र से उभर गये।।
कुन्थुनाथ जिनराज राज तज, आत्म तत्त्व का रस आया।
शुद्धातम का ध्यान लगाकर, महाराजा पद को पाया।।
कुन्थुनाथ जी कृपा करो मम्, ज्ञानामृत से हृदय भरो।
मोह तिमिर छाया नयनों का, विशद ज्ञान से दूर करो।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंच त्रिंशत् गणधर षष्टि सहस्र मुनिगण सहित श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

त्रय पद धारी जग उपकारी, अरहनाथ जग में नामी।
राग आग को त्याग किया है, बने आत्म धन के स्वामी।।
कुपथ का खण्डन करने वाली, हित मित प्रिय तेरी वाणी।
जिन सूत्रों की प्रतिपादक है, अत: कहाती जिनवाणी।।
अरहनाथ जी राह दिखा दो, मोक्ष महल में जाने की।
लगन लगी है मेरे मन में, जग से मुक्ती पाने की।।
अरहनाथ जी नहीं मिला है, जग में कोइ तेरी सानी।
विशद ज्ञानआचरण प्राप्त कर, बन जाऊँ केवलज्ञानी।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिंशत् गणधर पंचाशत् सहस्र मुनिगण सहित श्री अरहनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

मोह मल्ल को मार गिराया, आप हुए मल्लों के नाथ।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप, आराधन को लिया है साथ।।
काम अग्नि की तीव्र ज्वलन से, जलता है यह जग सारा।
शील सरोवर से जल भर करके, छोड़ी तुमने जलधारा।।
मल्लिनाथ के पद में नत हैं, इस जग में जो भी हैं मल्ल।
छूमंतर होती दर्शन से, मन में लगी हुई जो शल्य।।
मल्लिनाथ तव शील के आगे, हार काम ने भी मानी।
शील स्वभावी बना दीजिये, 'विशद' प्रतिज्ञा हम ठानी।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशति गणधर चत्वारिंशत् सहस्र मुनिगण सहित श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

मुनिसुव्रत जी ने मुनि बनकर, महाव्रतों को वरण किया।
द्रव्य भाव से रत्नात्रय को, स्वयं बोध से ग्रहण किया।।
निश्चय अरु व्यवहार मार्ग का, सुन्दर ढंग से कथन किया।
सप्त तत्त्व अरु नौ पदार्थ का, आत्म ध्यान से मथन किया।
संशय अरु अज्ञान से पीड़ित, जग में जो भी प्राणी हैं।
मुनिसुव्रत की मंगलवाणी, उन सबकी कल्याणी है।।
मुनिसुव्रत ने संयम सरिता, जन मानस में लहराई।
पद पंकज में मुनिसुव्रत के, 'विशद' भावना शुभ भाई।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादश गणधर त्रिंशत् सहस्त्र मुनिगण सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

नील कमल के सिंहासन पर, नमीनाथ जिनवर स्वामी।
नील गगन में अधर विराजे, नमी प्रभु हैं शिवगामी।।
निरालम्ब निर्मल निर्भय हो, नील गगन में जिनका वास।
तप्त स्वर्ण सम तन अति सुन्दर, प्रहसित होती सदा सुवास।।
नमीनाथ ने निज कमियों, को एक-एक कर दूर किया।
भोग रोग के नाश करन को, आत्म योग भरपूर किया।।

नमीनाथ जी साथ चाहते, मुक्ती पथ पर बढ़ने को।
'विशद' सहारा देना हमको, सिद्ध शिला पर चढ़ने को।।
अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तदश गणधर विंशति सहस्र मुनिगण सहित श्री नमीनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

राह पे बढ़ते हुये सुना था, पशुओं का जब आक्रन्दन।
सृजल हुआ था हृदय आपका, जैसे हो शीतल चंदन।।
रथ को मोड़ दिया था प्रभु ने, ऊर्जयन्त पर्वत की ओर।
गिरनारी के शीश पे चढ़कर, तप में लीन हुये अतिघोर।।
अम्बर तजकर हुये दिगम्बर, ध्यान लगाया आतम का।।
नेमि जिनेश्वर बनकर तुमने, पद पाया परमातम का।।
सारे जग की आशा त्यागी, वीतरागता को पाया।।
शरण छोड़कर सारे जग की, 'विशद' शरण तेरी आया।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकादश गणधर अष्टादश सहस्र मुनिगण सहित श्री नेमिनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

घोर उपद्रव करते-करते, हार काल ने भी मानी।
सारे जग के लोगों ने तब, तप की शक्ती पहिचानी।।
शुक्ल ध्यान में लीन हुये थे, सप्त तत्त्व का मनन किया।
पार्श्व प्रभू ने तप अग्नी से, कर्म शत्रु का हनन किया।।

चिंतामणि चिंतन करने पर, इच्छित फल को देते हैं।
पार्श्व प्रभू का चिंतन करके, मुक्ति वधू पा लेते हैं।।
पार्श्वनाथ के पद स्पर्श को, यह जग भरता है आँहें।
पार्श्व प्रभू के 'विशद' चरण में, पारस बनने की चाहें ।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं दश गणधर षोडश सहस्र मुनिगण सहित श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

हिंसा का जब जोर बढ़ा था, इस भारत की भूमी पर।
दास प्रथा खुलकर हँसती थी, ऊँचा था पापी का सर।।
सत्य अहिंसा परमो धर्मः, शुभ नारा गुंजाया था।
केवलज्ञान का दीप वीर ने, अपने हृदय जलाया था।।
ध्यान अग्नि से महावीर ने, केवलज्ञान जगाया था।
नर जीवन का सार जहाँ के, हर प्राणी ने पाया था।।
युगों-युगों तक दिव्य देशना, वर्धमान की साथ रहे।
वीर प्रभू के पद पंकज में 'विशद' हमारा माथ रहे।।

अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकादश गणधर चतुर्दश सहस्र मुनिगण सहित श्री महावीरस्वामी तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

घाती कर्म नशाने वाले, केवल ज्ञान जगाते हैं।
तीर्थंकर की गौरव गाथा, भाव सहित हम गाते हैं।।

ऋषभादिक चौबीस हुए हैं, वर्तमान के जिन तीर्थेश।
समवशरण में दिया आपने, भवि जीवों को सद् उपदेश।।

मोक्ष मार्ग के राही बनकर, किया आपने जग कल्याण।
स्वयं आपके साथ लोक में, पाए कई जीव निर्वाण।।
अर्हत् भक्ती करने को हम, चरण शरण में आते हैं।
रत्नत्रय निधि पाएँ हे जिन !, विशद भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा – **प्रभू भक्त हम आपके, भक्ती करें त्रिकाल।**
चौबीसों जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(चाल–टप्पा)

कर्म घातिया नाश किए तब, हुए ज्ञानधारी।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने वाले, जग–जन उपकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
आदिनाथ हैं आदि जिनेश्वर, जिन गुण के धारी।
अजितनाथ हैं नाथ लोक में, अति विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
संभव जिन की भक्ती भाई, जग में हितकारी।
अभिनंदन का वंदन होता, जग मंगलकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
सुमतिनाथ की दिव्य देशना, अतिशय सुखकारी।
पद्मप्रभु जी रहें लोक में, बनकर अविकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..

जिन सुपार्श्वजी पार्श्वमणी सम, हैं गुण के धारी।
चन्द्रप्रभु जी पूर्ण चाँदनी, सम शीतल धारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
पुष्पदंत ने कर्म अंत की, कीन्ही तैयारी।
शीतलनाथ जिनेश्वर की तो, महिमा है न्यारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
श्रेयनाथ जी श्रेय प्रदाता, हैं करुणाकारी।
वासुपूज्य जग पूज्य हुए हैं, ऋषिवर अनगारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
विमलनाथ जी मुक्ती हमको, मिल जाए प्यारी।
श्री अनंत जिन हैं इस जग में, गुण अनंतधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
धर्मनाथ जिनराज कहे हैं, विशद धर्मधारी।
शांतिनाथ जी हैं इस जग में, परम शांतिकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
कुंथुनाथ जिन हुए लोक में, त्रयपद के धारी।
अरहनाथ भी रहे जहाँ में, अति महिमाधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
मल्लिनाथ कर्मों के नाशी, अतिशय अविकारी।
मुनिसुव्रतजी व्रत धारण कर, हुए ज्ञानधारी।।

जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
नमीनाथ की पूजा करते, सारे नर-नारी।
नेमिनाथ वैराग्य धारकर, पहुँचे गिरनारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..
पार्श्वनाथ ने कठिन परिषह, सहन किए भारी।
महावीर की महिमा जग में, है विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।। जिनेश्वर..

(छन्द - घत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय शिवपुरगामी, त्रिभुवननामी, सिद्ध शिला के हो स्वामी।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - चौबीसों जिनराज को, वंदन बारम्बार।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाऊँ भवदधि पार।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2540 विक्रम सम्वत् 2070 मासोत्तम मासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे दशमी सोमवासरे रेवाड़ी नामनगरे जैनपुरी स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनालय (कुआँ वाला) मध्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातस्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातस्तत् शिष्य श्री विमलसागराचार्या जातस्तत् शिष्यः श्री भरतसागराचार्या श्री विरागसागराचार्या जातस्तत् शिष्यः विशदसागराचार्येण **श्री चौबीस तीर्थंकर विधान** रच्यते इति शुभं भूयात्।

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज - मांई रि मांई ...)

चौबिस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।। टेक।।

ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए। विशद आरती ...

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए। विशद आरती ...

श्रेयनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु अविकारी, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए। विशद आरती ...

शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए। विशद आरती ...

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमी धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए। विशद आरती ...

कर असम्भव को सम्भव हुए आप जिन,
कर्म नाशी कहो कौन है आप बिन।
तुम सा बनने को आये हैं हम तव चरण,
सम्भव जिनके चरण में 'विशद' हो नमन्।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित 120 विधानों की विशाल श्रृंखला

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धिप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण धर्म विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह-1
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. लघु धर्मचक्र विधान
72. अर्हत् महिमा विधान
73. सरस्वती विधान
74. विशद महाअर्चना विधान
75. विधान संग्रह (प्रथम)
76. विधान संग्रह (द्वितीय)
77. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गाँव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
80. अर्हत् नाम विधान।
81. सम्यक् आराधना विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु मृत्युञ्जय विधान
84. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
85. मृत्युञ्जय विधान
86. लघु जम्बूद्वीप विधान
87. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
88. क्षायिक नवलब्धि विधान
89. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
90. श्री गोम्मटेश्वा बाहुबली विधान
91. वृहद् निर्वाण क्षेत्र विधान
92. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
93. तीन लोक विधान
94. कल्पद्रुम विधान
95. श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
96. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान (लघु)
97. सहस्त्रनाम विधान (लघु)
98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
99. त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
100. पुण्यास्त्रव विधान
101. सप्त ऋषि विधान
102. तेरह द्वीप मण्डल विधान
103. श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ मण्डल विधान
104. श्रावक व्रत दोष प्रायश्चित्त विधान
105. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
106. सम्यक् दर्शन विधान
107. श्रुतज्ञान व्रत विधान
108. ज्ञान पच्चीसी विधान
109. चारित्र शुद्धि विधान
110. लघु शांति विधान
111. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
117. षट् खण्डागम विधान
118. दिव्य देशना विधान
119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
120. नवग्रह शांति विधान
121. विशद पत्रागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ति संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन रिवले मुरझा गए
127. जिन्दगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ति के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग-3
139. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग-1
143. चिंतवन सरोवर भाग-2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग-1
148. मूक उपदेश भाग-2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ति पीयूष
153. विशद मुक्तावली
154. संगीत प्रसून
155. आरती चालीसा संग्रह
156. भक्तामर भावना
157. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
158. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
159. विशद महा अर्चना संग्रह
160. विशद जिनवाणी संग्रह
161. विशद वीतरागी संत
162. काव्य पुञ्ज
163. पञ्च जाप्य
164. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
165. बिजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
166. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट-उपरोक्त विधानों में से आप अधिकाधिक पूजन विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। - मुनि विशालसागर